नारी की महिमा

महारानी माधवी के दिव्य नारियोचित गुणों पर आधारित

आचार्य विष्णु दास अग्रवाल

शुभकामनाएँ

श्री टीकाराम मित्तल 'प्रधानजी'
महाराजा अग्रसेन समाज कल्याण समिति, सोनीपत

श्रीमती कांता देवी मित्तल
(प्रधान पत्नी)
सोनीपत

श्रीमती शांता जैन
पूर्व राष्ट्रीय ट्रस्ट (अग्रोहा)
सोनीपत

'वैश्यरत्न' श्री ओंकार दास शर्मा
(संस्थापक-महा मंत्री)
म०अ०स० कल्याण समिति, सोनीपत

श्री अरविन्द मित्तल (एड.)
महाराजा अग्रसेन समाज कल्याण समिति, सोनीपत

श्री पवन गुप्ता
अग्रसेवक सम्पादक: परीक्षा पुस्तक
सोनीपत

श्रीमती कमलेश गुप्ता 'कुच्छल'
गृहणी
सोनीपत

श्रीमती इन्दु बंसल
निदेशक : भारत टी.वी.
सोनीपत

श्रीमती रक्षा जैन
पत्नी श्री नितिन जैन
निदेशक : अलौरा ग्रुप, सोनीपत

श्री संजय शर्मा
(समाज सेवी)
सोनीपत

श्री अजय अग्रवाल
(अग्रसेवक)
सोनीपत

श्री राजीव गुप्ता
प्रो० हिन्दुस्तान कम्प्यूटर
सोनीपत

श्री पवन अग्रवाल
(उपाध्यक्ष) महराजा अग्रसेन समाज कल्याण समिति, सोनीपत

श्री दया राम जैन
प्रो० अरिहंत मैडीकोस
गोहाना रोड, सोनीपत

श्री दौलत राम जैन
प्रो० डी.आर. इलैक्ट्रीकल्स,
गोहाना रोड, सोनीपत

श्री पवन कुमार सिंगला
प्रो० अग्रवाल मैडीकल स्टोर,
रोहतक रोड, सोनीपत

ॐ देवी माधवीयै नमः

बेटी बचाओ - बेटी पढाओ भाग्य जगाओ

नारी की महिमा

[महारानी माधवी के दिव्य नारियोचित गुणों पर आधारित]

लेखक :

आचार्य विष्णुदास अग्रवाल "शास्त्री"

(अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित एवं घोषित प्रमुख राष्ट्रीय अग्रविद्वान तथा मध्यप्रदेश सरकार के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित)

(रचयिता : अग्रसेन भागवत, देवी माधवी महिमा एवं महाराज विभु)

सम्पादन एवं टंकण :

पवन गुप्ता 'अग्रसेवक', सोनीपत

मो. नं. 09812119458

प्रकाशक :

अखिल भारतीय महारानी माधवी पुरस्कार समिति

श्री अग्र महालक्ष्मी मन्दिर, बड़ा पार्क, बल्केश्वर, आगरा - 282 005 (यू0पी0)

मो. नं. 08279466054, 9410668734

प्रथम प्रकाशन : जुलाई 2018

भेंट : पठन-पाठन

- सर्वाधिकार सुरक्षित : लेखकाधीन
- विशेष सहयोगी : समस्त अग्रबन्धु
- सम्पादन एवं टंकण : पवन गुप्ता 'अग्रसेवक', सोनीपत
- प्रथम संस्करण : 10,000 प्रतियाँ
- प्रकाशन वर्ष : जुलाई 2018
- प्रकाशक का नाम : अखिल भारतीय महारानी माधवी पुरस्कार समिति
- मुख्य कार्यालय : श्री अग्र महालक्ष्मी मन्दिर, बड़ा पार्क, बल्केश्वर चौराहा, आगरा-282004 (उ.प्र.)
- लेजर टाइप सैटिंग : देव कम्प्यूटर केन्द्र, बल्केश्वर, आगरा मो. 9897072816
- मुद्रक : राष्ट्रभाषा प्रेस, राजामण्डी, आगरा

अखिल भारतीय महारानी माधवी पुरस्कार समिति

संस्थापक-अध्यक्ष	प्रांतीय महामंत्री
आचार्य विष्णुदास अग्रवाल 'शास्त्री'	पवन गुप्ता 'अग्रसेवक'
आगरा	सोनीपत

नोट - इस ग्रंथ का कोई भी अंश पूर्व लिखित अनुमति के बिना प्रयोग करना पूर्णतया अवैधानिक एवं अनैतिक होगा तथा समस्त विवादों का न्याय-क्षेत्र आगरा होगा।

लेखक की कलम से

"यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता। जहाँ नारी शक्ति की पूजा की जाती है वहाँ देवताओं का वास होता है। देवी सीता, तारामती, अनुसुइया, अहिल्या, तुलसीरानी आदि अनेकानेक नारियों ने अपने त्याग, तपस्या, समर्पण एवं सदाचारशीलता से अनुकरणीय स्थान प्राप्त किया है।

आग्रेयगणराज्य गत् 5142 वर्षों से भू-तल का सर्वाधिक प्रतिष्ठित, समृद्ध, सहयोगी, समत्वाधारित एवं सर्वपोषक राज्य रहा है। इसका कारण है—भगवान श्रीराम के लघुसुत कुश की 34वीं पीढ़ी के रूप में जन्म लेने वाले शिवरूपी भगवान अग्रसेन जी का अवतरण। पुरुष की महानता में नारी का विशिष्ट स्थान सुनिश्चित होता आया है। अग्रवंश के सर्वमान्य सिद्धान्तों में "एक ईंट एक रुपया से सच्चा समाजवाद सम्भव" प्रमुख है। दान दो तो दूसारे हाथ को पता न लगे। विद्वानों की आवश्यकताओं का समुचित ध्यान रखो। याचना की अपेक्षा कर्तव्य-कर्म को प्रमुखता दीजिये। स्त्री-रक्षा से ही कुल-संवर्धन सम्भव है। शत्रु को नहीं शत्रुता का वध ही अग्रगुण है। पुत्री के अभाव में मातृत्व के साथ पितृत्व भी अपूर्ण है। भ्रातृप्रेम में बहन का महत्व। कुलधर्म के विनाश का कारण स्त्रीधर्म का क्षरण। वीरता, धर्मपरायणता, कर्तव्य पथ पर अंगदीय ठहराव, निडरता और विशालता जैसे अनेकानेक गुणों (मंत्रों) की सिद्धपूरणी नागकन्या माधवी जी का दिव्य जीवन-चरित्र वर्तमान की संजीवनी है।

नारी शक्ति को जागृत करने हेतु प्रश्नोत्तरी प्रणाली के द्वारा शिक्षित किया जाय, जिसमें पुरस्कारों का भी योगदान हो। इस हेतु इस 'नारी की महिमा' नामक प्रश्नोत्तरी पुस्तिका का सृजन किया गया है।

इस ग्रंथ के प्रकाशन में श्री टीकाराम गुप्ता 'प्रधानजी', श्रीमती शांता जैन जी, सम्पादन-टंकण सहयोगी अग्रसेवक पवन गुप्ता जी तथा अन्य अपरोक्ष सहयोगियों का मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने महारानी माधवी के दिव्य गुणों पर आधारित विश्व के इस प्रथम प्रकाशन पर हमें भरपूर सहयोग दिया।

—आचार्य विष्णुदास 'शास्त्री'

दिनांक 06 जून 2018
ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी

देवी माधवी जी की आरती

आरती नागकुँवरि की कीजै। देवी माधवी जी की कीजै।।टेक।।

नागवंश में जन्म लिया है, विष्णुवंश में व्याह किया है,
देवलोक को प्यार दिया है, **आरती त्रय पुर हिय की कीजै।।1।।**

नागराज महिधर की प्यारी, मणिरानी नागेन्द्रि दुलारी,
सत्रह बहनन प्रीति सँवारी, **आरती सखियन प्रिय की कीजै।।2।।**

पुत्र अष्टदश मात कहायीं, सुता ईश्वरी हृदय समायीं,
पुत्रिं वासुकी निज गृह लायीं, **आरती श्री उर पुर की कीजै।।3।।**

सत् समता का पाठ पढ़ाया, जल वायू तरु मान बढ़ाया,
स्नेह कर्म स्तम्भ गढ़ाया, **आरती वैश्य अमिय की कीजै।।4।।**

अग्रवंश महारानी जै जै, श्री हरि हर रिधि सिधि प्रिय जै जै,
सकल लोक उद्धारक जै जै, **आरती समतेश्वरी की कीजै।।5।।**

हे माँ! हम पर किरपा कीजै, शोक अभाव कबहुँ नहिं दीजै,
"विष्णुदास" निज जन हिय लीजै, **आरति सर्वसुहृद की कीजै।।6।।**

जय माता माधवी

महारानी माधवी ज्ञान परीक्षा से संबंधित प्रश्नोत्तरी पुस्तिका

प्र. 1 महारानी माधवी का जन्म किस तिथि, समय, दिन, पक्ष में हुआ था?

उत्तर- महारानी माधवी का जन्म श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पञ्चम् तिथि को रात्रि के 12 बजे जन्म हुआ था।

प्र. 2 महारानी माधवी के माता-पिता का नाम बताइए?

उत्तर- महारानी माधवी की माता का नाम नागेन्द्री तथा पिता का नाम महिधर था।

प्र. 3 महारानी माधवी का जन्म किस वंश में हुआ था?

उत्तर- महारानी माधवी का जन्म नागवंश में हुआ था।

प्र. 4 जातक के वंश की स्थापना किसने की थी?

उत्तर- जातक के वंश की स्थापना शेषनाग द्वारा की गई थी।

प्र. 5 महारानी माधवी के पिताजी का पूरा नाम क्या था?

उत्तर- माधवी जी के पिता जी का पूरा नाम नागराज महिधर था।

प्र. 6 माधवी के पिता से पूर्व कौन-2 से शासक हुए थे, उनके नाम बताइए?

उत्तर- माधवी के पिता से पूर्व नागाधिपतियों के नाम एवं क्रम इस प्रकार हैं:- शेषनाग, विशधर, वासुकी एवं तक्षक।

प्र. 7 परीक्षित को किसने डसा था?

उत्तर- नागवंश के चतुर्थ शासक तक्षक ने कुरुवंश के महाराज परीक्षित को डसा था।

प्र. 8 माधवी की माताजी का पूरा नाम क्या था?

उत्तर- देवी माधवी की माताजी का पूरा नाम नागरानी नागेन्द्री था।

प्र. 9 माधवी के कितने भाई-बहन थे, उनके नाम बताइए?

उत्तर- माधवी की सत्रह बहनें थी। भाई कोई नहीं था। बहनों के नाम इस प्रकार हैं-श्रद्धा, शुचि, धी, शक्ति, आभा, नीर, जलदा, अनु, प्रिया, ऊर्जा, दामिनी, वृद्धी, प्रकृति, प्रवृत्ति, सौम्या, आषा और सामर्थ्य।

प्र. 10 माधवी की सखियों के नाम बताइए?

उत्तर- देवी माधवी की अश्ट सखियों के नाम इस प्रकार हैं:- चित्रा, सखी, कामना, प्रीती, मोहिनी, स्वप्ना, भावना और नीति।

प्र. 11 माधवी की प्रिय सखी का नाम क्या था?

उत्तर- देवी माधवी की प्रिय सखी का नाम चित्रा था।

प्र. 12 माधवी को किस देवी का अंशावतार माना जाता है?

उत्तर- देवी माधवी को माता पार्वती का अंशावतार माना जाता है।

प्र. 13 अंशावतार लेने का प्रमुख कारण बताइए?

उत्तर- अंशावतार लेने का प्रमुख कारण था शिवाग्र के सहयोग से नागवंश-वैष्णववंश एवं देववंश को एक सूत्र में बाँधना।

प्र. 14 जन्म से पूर्व मूल अंश ने देवलोक में किस स्थान पर किन ऋषि के आश्रम में चर्चा की थी?

उत्तर- जन्म से पूर्व मूल अंष ने देवलोक में देवगुरू वृहस्पति के आश्रम में चर्चा की थी।

प्र. 15 चर्चा में कौन-2 शामिल थे?

उत्तर- देवर्षि नारद, माता लक्ष्मी, देवी सरस्वती, ब्रह्माजी तथा देवराज इन्द्र आदि उस चर्चा में शामिल थे।

प्र. 16 देवर्षि नारद की उसमें क्या भूमिका थी?

उत्तर- देवर्षि नारद को ही उस चर्चा का सूत्रधार कहा गया था।

प्र. 17 देवराज इन्द्र ने कौनसी इच्छा प्रकट की थी?

उत्तर- देवराज इन्द्र ने इच्छा प्रकट की कि किए गए पापों का प्रायष्चित करने के लिए मुझे भी भूलोक में जाने की अनुमति प्रदान की जाए।

प्र. 18 ब्रह्मदेव ने देवी उमा से क्या कहा?

उत्तर- ब्रह्मदेव ने कहा-देवी उमा! उचित समय आने पर आपकी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी।

प्र. 19 माधवी को कौनसी कन्या कहा जाता है?

उत्तर- देवी माधवी को (उमारूपाय) नागकन्या कहा जाता है।

प्र. 20 माधवी की शिक्षा कहाँ हुयी थी?

उत्तर- देवी माधवी की शिक्षा राजपरिवार में हुई थी।

प्र. 21 माधवी की परीक्षा लेने कौन कहाँ पर आये थे?

उत्तर- देवी माधवी की परीक्षा लेने के लिए ब्राह्मण भेषधारी शिवाग्र नाग दरबार में आये थे।

प्र. 22 परीक्षा के समय माधवी की आयु क्या थी?

उत्तर- परीक्षा के समय माधवी की आयु चौदह वर्ष की थी।

प्र. 23 परीक्षक ने क्या कहा था?

उत्तर- परीक्षक ने कहा - नागराज जी! आपकी पुत्री सम्पूर्ण नारी-जाति की सुरक्षा एवं सुखी जीवन के आधार रूप में त्रिलोक का गौरव सिद्ध होगी।

प्र. 24 सच्चे वैष्णव में किन-2 गुणों का होना आवश्यक कहा गया है?

उत्तर- धैर्य, प्रेमभाव, मृदुवाणी, शालीनता तथा निश्छल मन।

प्र. 25 देवी उमा के साथ उनके पुत्रों की क्या भूमिका रही? स्पष्ट करिये?

उत्तर- गणपति अदृश्य रूप में तथा कार्तिकेय ने देवी माधवी के बड़े पुत्र के रूप में पृथ्वी पर जन्म लिया।

प्र. 26 इनके अतिरिक्त कौन-सी शक्तियाँ भूमि पर पधारीं?

उत्तर- ऋद्धि-सिद्धि सहित कुछ अन्य शक्तियाँ भी भूमि पर पधारी।

प्र. 27 भू-वासियों ने कितनी शक्तियों की कृपा प्राप्त की?

उत्तर- श्रीहरि, श्रीहर, माता महालक्ष्मी, माता शक्ति, गणपति, कार्तिकेय एवं ऋद्धि-सिद्धि सहित अनेक कृपालुओं की कृपा भू-वासियों ने प्राप्त की।

प्र. 28 देवराज इन्द्र की अभिलाषा पूर्ण होने पर उनकी पत्नि की क्या दशा हुई?

उत्तर- बेचारी उदास रहती है। वह अपने मन की व्यथा को व्यक्त करना चाहकर भी व्यक्त नहीं कर पाती है। इतना ही नहीं, वह सारा जीवन रोते हुए काटने पर विवश होती है।

[redacted]

प्र. 30 प्राचीन, अर्वाचीन तथा भविष्य की नारियों के सम्मुख पति (पुरुष) की कैसी दशा होगी (थी), वर्णन कीजिए?

उत्तर- 1) सहधर्मिणी की 2) सहकर्मी की। 3) भविष्य में स्वच्छन्द शासक की तरह आचरण करने वाली नारियों के सम्मुख पुरुषों की दशा, पराधीन अर्थात् हर कार्य के लिये मुँह ताकने वालों की होगी।

प्र. 31 जनजन की अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाला कौन सा वंश है?

उत्तर- महान अग्रवंश।

प्र. 32 अग्रवंश को महान क्यों माना गया है?

उत्तर- क्योंकि अग्रवंश निःस्वार्थ भाव से हर वर्ण, जाति, धर्म के प्रति समान भाव से सहयोग करने को अपना जीवन दर्शन मानता है।

प्र. 33 नागलोक में कुल कितने लोक हैं?

उत्तर- सात

प्र. 34 नागलोक कहाँ पर है?

उत्तर- जल के अंदर।

प्र. 35 सप्तलोक के नाम बताइए?

उत्तर- तल, अतल, वितल, सुतल, महातल, रसातल और पाताल।

प्र. 36 पाताल लोक में भगवान विष्णु ने किस असुर को शासक बनाकर भेजा था?

उत्तर- बलि को।

प्र. 37 नारायण ने द्वारपाल के रूप में कहाँ नौकरी की थी?

उत्तर- पाताल लोक में। राजा बलि के महल में द्वारपाल के रूप में।

प्र. 38 नारायण को वापिस लाने कौन गया था?

उत्तर- लक्ष्मी जी।

प्र. 39 लक्ष्मी जी ने किसे क्या बाँधा था?

उत्तर- पाताललोक में पातालपति बलि को रक्षा सूत्र बाँधा था।

प्र. 40 बलि से किसने कौन सी इज्जत वापिस ली थी?

उत्तर- लक्ष्मी जी द्वारा राजा बलि को राखी बाँधने पर भाई बलि द्वारा दिए गए नेग के रूप में द्वारपाल बने नारायण को वापिस माँग लिया था।

प्र. 41 पाताल में और कौन-2 से महारथियों ने प्रवास किया था?

उत्तर- महाबली भीमसेन और बर्बरीक ने।

प्र. 42 उन दोनों का आपस में क्या सम्बन्ध था?

उत्तर- दादा-पोते का।

प्र. 43 उनमें से किसका सम्बन्ध खाटू नरेश से माना जाता है?

उत्तर- बर्बरीक का।

प्र. 44 पाताल लोक का माधवी के पिता से क्या नाता था?

उत्तर- पाताल लोक को ही मणिपुर कहा गया था।

प्र. 45 नागलोक में किस मणि की अधिकता थी?

उत्तर- नागमणि की।

प्र. 46 माधवी के पिताजी को क्या कहकर पुकारा जाता था?

उत्तर- नागराज महिधर।

प्र. 47 नागराज महिधर के गुणों का वर्णन कीजिए?

उत्तर- न्यायप्रिय, नीतिज्ञ, मतिमान, शस्त्रज्ञ, शास्त्रज्ञ, समतापति, जनप्रिय, विष-अमृत कोषाध्यक्ष, आततायियों एवं दुष्टों के लिए साक्षात् काल आदि गुणों से युक्त।

प्र. 48 माधवी के माता-पिता के वंश का नाम बताइए?

उत्तर- नागवंश।

प्र. 49 माधवी के माता के व्यवहार का वर्णन कीजिए?

उत्तर- धर्मप्रिय, कर्मशील, पातिव्रत धर्मपालक एवं जनहित विचार धारिणी।

प्र. 50 नागवंश किस देवता का उपासक था?

उत्तर- भगवान शिवशंकर का।

प्र. 51 नागवंश का भगवान विष्णु से क्या कोई संबंध था, यदि हाँ तो किस रूप में?

उत्तर- जी हाँ। नागवंश के संस्थापक शेषनाग भगवान विष्णु के शयनगाह कहे जाते हैं।

प्र. 52 नागवंशी भगवान शिव को क्यों प्रिय है?

उत्तर- क्योंकि नाग भगवान शिव के कर और कण्ठ में हार के रूप में सदा अठखेलियाँ करते हैं।

प्र. 53 माधवी के जन्म के समय अग्रसेन जी की कितनी आयु थी?

उत्तर- पाँच वर्ष की।

प्र. 54 अग्रसेन जी को किस देवता का अंश माना जाता है?

उत्तर- भगवान शिव का, धैर्यऽवतार रूप।

प्र. 55 माधवी के जन्म के समय चन्द्रमा और स्वर्ग ने क्या किया?

उत्तर- चन्द्रमा ने अमृत और स्वर्ग ने पुष्पों की वर्षा की थी।

प्र. 56 जन्म के समय नागलोक में क्या हुआ?

उत्तर- सम्पूर्ण नागवंश तथा वहाँ के सभी बाग-बगीचों के हृदय प्रफुल्लित हो उठे थे। वृक्ष नाचने लगे थे।

प्र. 57 वरुण देवता ने क्या किया?

उत्तर- वरुणदेव ने जल बरसाया और दामिनी ने श्याम घटा को अद्वितीय प्रकाश से चकाचौंध कर दिया।

प्र. 58 जातक का मुखदर्शन करने देवलोक से कौन आए थे?

उत्तर- ब्रह्मदेव, इन्द्र, श्रीहर, श्रीहरि, महर्षि उद्दालक, देवर्षि नारद, देवी लक्ष्मी तथा माता सरस्वती आदि।

प्र. 59 नागराज ने कुलगुरु से क्या कहा?

उत्तर- कृपया कन्या का भविष्य बताएँ।

प्र. 60 नागकुलाचार्य ने जातक के साथ क्या किया?

उत्तर- नागकुलाचार्य जातक को अपने दोनों हाथों में लेकर नाचने लगे। अश्रुओं ने जातक के चरणों का प्रक्षालन किया।

प्र. 61 कुलगुरु की उस समय कैसी दशा थी?

उत्तर- पगलाए की सी। कभी रोते हुए की तो कभी हँसते हुए व्यक्ति की।

प्र. 62 अन्ततः जातक की कुण्डली किसने बाँची?

उत्तर- ब्रह्मदेव ने।

प्र. 63 ब्रह्मदेव ने कुण्डली के अनुसार क्या भविष्यवाणी की?

उत्तर- यह कि इस जातक ने अति शुभ कार्य हेतु अवतार लिया है। यह कन्या सकल लोक का पोषण करेगी। विष-अमृत का मेल करेगी। शोक और विषमता को समाप्त करेगी।

प्र. 64 अज ने नागाचार्य जी से क्या कहा?

उत्तर- यह कन्या शैव्य और वैष्णवों को एक करेगी। साथ ही यह देवताओं को भी मित्र बनाएगी।

प्र. 65 इस मित्रता को देखकर कौन निराश होगा?

उत्तर- कुविचारीजन। ऐसे शत्रु रोने को विवश होंगे।

प्र. 66 नागाचार्य ने और क्या-2 कहा?

उत्तर- समता रूपी सरिता का स्वच्छ जल प्रवाहित होगा। भूमि पर स्थित शोक एवं अशांति दूर होगी। ऊँच नीच, राजा-प्रजा, श्रेष्ठ-अधम, श्रीयुत और श्रीहीनता के साथ सम्पन्नता-विपन्नता का भेद भी समाप्त होगा।

प्र. 67 जीव के किस रूप (योनी) को अमूल्य कहा गया है?

उत्तर- मनुष्य रूप (योनी) को।

प्र. 68 क्यों?

उत्तर- क्योंकि मनुष्य को विवेक बुद्धि प्रदान की गई है जोकि अन्य किसी योनी के जीव को नहीं मिलती।

प्र. 69 स्त्री जाति के प्रति हमें कौन-सी सौगन्ध लेनी चाहिए?

उत्तर- यही कि पुत्री और पुत्र में कोई भेद नहीं होगा। स्त्री को जननी कहा गया है। नारी सुरक्षा की सौगन्ध लेकर ही हम पुरुष की सुरक्षा कर सकने में सक्षम हो सकते हैं।

प्र. 70 नागलोक के सेनापति का नाम बतलाइए?

उत्तर- चित्रांग।

प्र. 71 जातक के दर्शनार्थ आने वाले नाग राजाओं के नामों का वर्णन कीजिए?

उत्तर- शेषनाग, विषधर, वासुकि और तक्षक।

प्र. 72 जातक के दर्शन को आने वाले प्रमुख नागों का उल्लेख कीजिए?

उत्तर- चित्रांग, मणीनाथ, कर्कोटक, कल्माष, अनन्त, सर्पदंश, कालिय एवं नागदन्त।

प्र. 73 देवलोक में और कौन-2 हर्षित हो रहा था। नर्तकियों के भी नाम बताइए?

उत्तर- सम्पूर्ण देव समाज। उर्वषी एवं रम्भा देव अप्सरायें नर्तन कर अपना-अपना हर्ष प्रकट कर रही हैं।

प्र. 74 नैमीषारण्य में वक्ता और प्रमुख श्रोता कौन-2 थे?

उत्तर- सूतजी और शौनक ऋषि।

प्र. 75 सच्चे मन से माँ का ध्यान लगाने से क्या होता है?

उत्तर- सच्चे मन से माँ का ध्यान लगाने से हर प्रकार का शोक और बवण्डर अपने आप व्यक्ति से दूर भाग जाते हैं।

प्र. 76 जातक के रूप-सौन्दर्य का वर्णन कीजिए?

उत्तर- जातक गौरवर्णीय, कमनीय, मधु के समान मधुरता से परिपूर्ण, दिव्य छवि से युक्त रमणीय कन्या थी जो सहज ही दर्शनार्थियों के हृदय में बस जाती थी।

प्र. 77 देवी माधवी की बहिनों का पूर्व रूप क्या था?

उत्तर- सभी बहिनें देवलोक की अप्सरायें थीं।

प्र. 78 उन्होंने अपने किस गुण का त्याग किया था?

उत्तर- उन्होंने ऐश्वर्य का त्याग करके नागिन रूप धारण किया था।

प्र. 79 कामदेव की पत्नी का नाम क्या था?

उत्तर- रति।

प्र. 80 रति ने क्या किया?

उत्तर- रति ने मोहिनी रूप धारण किया था।

प्र. 81 रति कहाँ जाकर समायी थी?

उत्तर- माधवी के मन में, वो भी मोहिनी रूप में।

प्र. 82 सूतजी ने माँ के विषय में क्या कहा था?

उत्तर- सूतजी ने कहा था - माँ क्या नहीं जानती? माँ तो भक्तों के सुख के लिए लीलायें करती रहती हैं।

प्र. 83 माँ ऐसा क्यों कर रही थी?

उत्तर- माँ तो भक्तों के सुख के लिए सीखने की लीला कर रही थी।

प्र. 84 माधवी किस आयु में पूर्ण चन्द्र के समान दिखायी देने लगी?

उत्तर- ग्यारह वर्ष की आयु में।

प्र. 85 शिक्षा पूर्ण होने पर माधवी जी ने क्या किया?

उत्तर- शिक्षा पूर्ण होने पर देवी माधवी ने गुणीजनों को संतुष्ट करके उनसे आशीष प्राप्त किया।

प्र. 86 नारियों के लिए शिक्षा आवश्यक है-ऐसा किसने कहा था?

उत्तर- महर्षि उद्दालक ने।

प्र. 87 नागाचार्य ने ऐसा क्यों कहा था?

उत्तर- क्योंकि उस समय स्त्री को चारदीवारी में बंद करने की प्रथा थी। जबकि शिक्षा प्राप्त करना नारी का मूल अधिकार है।

प्र. 88 पुत्री को शिक्षा से वंचित करने वाले माता-पिता को कौन सा दण्ड प्राप्त होता है?

उत्तर- ऐसे पक्षपातियों को कुम्भीपाक नरक में जाना पड़ता है।

प्र. 89 माधवी को आगे की शिक्षा दिलवाने के विषय में किसने कहा था?

उत्तर- माधवी को आगे की शिक्षा दिलवाने के विषय में महर्षि नुद्दालक ने नागराज से कहा था कि अब मैं स्वयं माधवी को शिक्षा प्रदान करूँगा।

प्र. 90 ऐसा उन्होंने क्यों कहा था?

उत्तर- क्योंकि महर्षि उद्दालक माधवी को उस दिव्य ज्ञान की शिक्षा देना चाहते थे जिसे प्राप्त करके स्त्री जाति गौरवपूर्ण जीवन जी सके।

प्र. 91 नागाचार्य जी ने किस-किस विषय की शिक्षा का ज्ञान माधवी जी को करवाया?

उत्तर- तर्कशक्ति, कूटनीति, ज्ञानशास्त्र, विवेक बुद्धि, सृजनशीलता के साथ-2 शिष्टाचार की भी शिक्षा महर्षि ने माधवी जी को दी।

प्र. 92 आदर्श नारी में किन-किन गुणों का होना आवश्यक है?

उत्तर- कुलीन पुत्री, सुलक्षणा वधु, वात्सल्ययुक्त माँ, स्नेह को बरसाने वाली सास, शासन करने वाले शासक में होने वाले आवश्यक गुण, सुन्दर (निष्कपट) बुद्धि से की जाने वाली शुद्ध अविचल भक्ति, करुणा, किसी भी कार्य को करने की क्षमता तथा ज्ञान का बल आदि सद्गुणों का आदर्श नारी में होने को आवश्यक क्यों कहा गया है।

प्र. 93 उद्धव के गुरुजी का नाम क्या था?

उत्तर- वृहस्पति।

प्र. 94 उद्धव जी के गुरुजी का देवताओं से क्या सम्बन्ध था?

उत्तर- वह देवताओं के भी गुरू थे।

प्र. 95 माधवी जी ने देवगुरु से कौन-2 सी शिक्षायें ग्रहण की थी?

उत्तर- व्यावहारिक नीतियाँ, नयनीति, सामाजिक पारमार्थिक नीति, न्याय नीति, सन्धि नीति सहित मृदुनीति आदि अनेकानेक लोकोपकारी शिक्षायें देवी माधवी जी ने देवगुरू से ग्रहण की थी।

प्र. 96 माधवी जी ने ब्रह्मा जी से किस महान गुण की शिक्षा ग्रहण की थी?

उत्तर- समता जैसे महान गुण की।

प्र. 97 माधवी जी ने गायन कला किससे ग्रहण की?

उत्तर- गन्धर्वराज चित्ररथ से।

प्र. 98 माधवी जी ने पृथ्वी से क्या सीखा?

उत्तर- नमता अर्थात् समर्पण।

प्र. 99 वीणावादिनी से माधवी जी ने किस गुण को आत्मसात् किया था?

उत्तर- अन्य आवश्यक विद्याओं को।

प्र. 100 शिक्षा ज्ञान के साथ-साथ माधवी जी ने अपने गुरुजनों से और किस विशेष गुण को ग्रहण किया था?

उत्तर- आत्मीयता को। गुरुओं द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा के साथ-2 उनकी आत्मीयता को भी प्राप्त करना शिक्षार्थी के लिए अति आवश्यक है क्योंकि गुरुओं की आत्मीयता को भविष्य में सफलता के साथ-साथ अतिरिक्त सोपान/सहयोग भी कहा गया है।

प्र. 101 पूर्ण शिक्षा प्राप्ति के समय माधवी जी की कितनी आयु थी?

उत्तर- चौदह वर्ष।

प्र. 102 माधवी जी के साथ विशेष घटना कितने वर्ष की आयु में घटी थी?

उत्तर- पन्द्रह वर्ष की आयु में।

प्र. 103 महाराजा अग्रसेन जी और देवी माधवी जी की आयु में कितना अंतर था?

उत्तर- महाराजा अग्रसेन जी देवी माधवी जी से पाँच वर्ष बड़े थे।

प्र. 104 श्री अग्रसेन जी और श्रीकृष्ण जी की आयु में कितना अंतर था?

उत्तर- भगवान श्रीकृष्ण अग्रसेन जी से 103 वर्ष बड़े थे।

प्र. 105 माधवी जी एवं उनकी बहिनों की सुंदरता की तुलना किससे की गई है?

उत्तर- चन्द्रमा से।

प्र. 106 प्रथम 'शिक्षा पूर्ण दिवस' किस तिथि को मनाया गया था?

उत्तर- आषाढ़ मास में शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को।

प्र. 107 'शिक्षा पूर्ण दिवस' पर हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर- इस दिन गुरुजनों को सम्मान सहित भेंट आदि देकर संतुष्ट करना चाहिए। साथ ही द्वार पर आए हुए ब्राह्मणों, अतिथियों एवं याचकों को दान देकर उनका आशीष प्राप्त करना चाहिए।

प्र. 108 नागासन पर विराजमान नागराज महिधर के राजदरबार में किसने प्रवेश किया था?

उत्तर- एक विद्वान ब्राह्मण ने।

प्र. 109 उस समय दरबारीजनों ने क्या किया?

उत्तर- नागराज सहित उपस्थित दरबारीजनों ने अपने अपने आसन से उठकर उस ब्राह्मण को प्रणाम किया और उनसे उनके वहाँ आने का कारण पूँछा।

प्र. 110 विद्वान युवा ब्राह्मण ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर- विद्वान युवा ब्राह्मण ने नागराज से कहा- मैं आपकी अति बुद्धिमती ज्येष्ठ कन्या जो तर्कशक्ति से सम्पन्न है, की परीक्षा लेना चाहता हूँ।

प्र. 111 नागराज ने प्रश्नकर्त्ता विद्वान युवा ब्राह्मण से क्या कहा?

उत्तर- अनजान पुरुष के सम्मुख राजकन्या का इस तरह उपस्थित होना क्या उचित है?

प्र. 112 नागराज जी ने अपने दूसरे प्रश्न में ब्राह्मण से क्या कहा था?

उत्तर- राजकन्या का किसी ब्राह्मण से उसकी इच्छानुसार शास्त्र-चर्चा करना उचित नहीं है।

प्र. 113 विद्वान ब्राह्मण ने नागराज जी को क्या उत्तर दिया?

उत्तर- हे नागराज! मैं श्मशान का वासी हूँ। मुर्दों की भस्म मेरा श्रृंगार है तथा जलती हुई चिताओं से उठने वाला धुआँ ही मेरा आहार है।

प्र. 114 ब्राह्मण ने अपना सिद्ध क्षेत्र किस स्थान को बतलाया?

उत्तर- कैलाश पर्वत की चोटियों को।

प्र. 115 ब्राह्मण के अनुसार जगत् क्या है?

उत्तर- जगत को रणक्षेत्र की संज्ञा दी गई है।

प्र. 116 ब्राह्मण ने अपने आने का कौन सा कारण बतलाया?

उत्तर- ब्राह्मण ने कहा - राजन्! मेरा आगमन आपकी पुत्री के लिए अति शुभ एवं महाहितकारी सिद्ध होने वाला है।

प्र. 117 तब नागराज महीधर ने क्या निर्णय लिया?

उत्तर- नागराज महीधर ने अमात्यों एवं सभासदों से परामर्श करने के उपरांत डरते-डरते अपनी ज्येष्ठ कन्या माधवी को नाग दरबार में बुलवाने का आदेश दिया।

प्र. 118 दरबार में देवी माधवी को कहाँ बैठने को कहा गया?

उत्तर- देवी माधवी को युवा ब्राह्मण के सम्मुख आसन पर बैठने के लिए कहा गया।

प्र. 119 ब्राह्मण की ओर देखकर देवी माधवी की क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर- जैसे ही देवी माधवी ने ब्राह्मण की ओर अपने दिव्य नेत्र घुमाए तो देवी माधवी हँस पड़ी। देवी सकुचाने लगी क्योंकि प्रश्नकर्त्ता और कोई नहीं शिवांश महाराज अग्रसेन जी थे।

प्र. 120 युवा ब्राह्मण का देवी माधवी जी से प्रथम प्रश्न क्या था?

उत्तर- जगत् में ऐसा क्या है जिसे सहजता से प्राप्त ना किया जा सके।

प्र. 121 देवी माधवी जी ने प्रश्न का क्या उत्तर दिया?

उत्तर- स्वयं को जानना। "मैं देह नहीं देही हूँ" - सच को ही यथार्थ समझना।

प्र. 122 युवा ब्राह्मण का दूसरा प्रश्न क्या था?

उत्तर- देह और देही में होने वाली विषमता को किस प्रकार समता में परिवर्तित किया जा सकता है।

प्र. 123 देवी माधवी जी ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर- देवी माधवी जी ने उत्तर दिया - कि जीव को चाहिए कि वह व्यय को अव्यय माने।

प्र. 124 देह और देही में परम सत्य क्या है?

उत्तर- हमें व्यय अर्थात् देह को देही अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति का साधन मात्र समझना चाहिए। यही परम सत्य है जिसे हमें भलीभाँति जान लेना चाहिए।

प्र. 125 तीनों लोक किस सिद्धांत के प्रति नतमस्तक होते हैं?

उत्तर- 'समत्व'। 'समता' के समक्ष तीनों लोक स्वाभाविक रूप से नतमस्तक होते आए हैं।

प्र. 126 युवा ब्राह्मण ने किसको महाविरोधी की संज्ञा दी है?

उत्तर- विष और अमृत को।

प्र. 127 देवी माधवी ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर- देवी माधवी ने विष को कटु वाणी तथा अमृत को मृदु विचार बतलाया।

प्र. 128 विष और अमृत को किस प्रकार एक पात्र में रखा जा सकता है?

उत्तर- आवेशरूपी विष को धैर्यरूपी अमृत के साथ ही एक पात्र में रखा जा सकता है।

प्र. 129 श्रीहरि विष्णु का वाहन किसे बताया गया है?

उत्तर- गरूण नामक पक्षी को श्रीहरि विष्णु का वाहन बताया गया है।

प्र. 130 गरूण अपना सबसे बड़ा शत्रु किसको मानता है?

उत्तर- विषधारी नाग को।

प्र. 131 युवा ब्राह्मण ने यह क्यों पूँछा कि गरूण और नाग में मित्रता होनी चाहिए?

उत्तर- क्योंकि मित्रता में आनन्द है जबकि शत्रुता में हानि ही हानि है।

प्र. 132 शत्रुता को किस प्रकार समाप्त किया जा सकता है?

उत्तर- देवी माधवी ने उत्तर दिया-ब्राह्मणदेव! ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि हाड़मांस की बनी बेचारी कोमल नारी बत्तीस छुरियों के मध्य बड़ी शान से अठखेलियाँ करती रहती है।

प्र. 133 यहाँ कोमल नारी का सम्बोधन किसके लिए किया गया है?

उत्तर- जिह्वा (जीभ) के लिए।

प्र. 134 द्विज ने किन दो वर्गों के मध्य स्नेह के बीज अंकुरित होने की बात कही है?

उत्तर- द्विज ने सुर और असुर तथा नर और नाग जैसे महा विरोधियों के मध्य स्नेह के बीज अंकुरित होने की बात कही है।

प्र. 135 स्नेह बीज अंकुरण पर उमास्वरूपिणि ने अपना क्या मत प्रकट किया?

उत्तर- उमास्वरूपिणी ने अपना मत प्रकट करते हुए कहा - कि प्राणी को चाहिए कि प्रथम तो वह अपने अंदर की 'मैं' रूपी मय का त्याग करे और फिर 'हम' रूपी अमृत का पान करे।

प्र. 136 मय की अमृत से संधि कैसे संभव है?

उत्तर- माधवी ने कहा-''मैं'' अर्थात् मयरूपी समिधा को अमृतरूपी कुण्ड में डालने से ऐसा संभव हो सकता है।

प्र. 137 इस दिव्य अमृत का पान और कौन कौन कर सकता है?

उत्तर- मन, बुद्धि एवं परमात्मारूपी आत्मा स्नेहरूपी अमश्त का पान करने में सफल हो सकती है।

प्र. 138 सृष्टि में कितने लोकों की कल्पना की गयी है?

उत्तर- तीन लोकों की।

प्र. 139 तीनों लोकों के नाम बताइए?

उत्तर- ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक और अधलोक।

प्र. 140 किस लोक में जीवन की कल्पना की गई है?

उत्तर- मध्यलोक में।

प्र. 141 ऊर्ध्वलोक किसे प्राप्त होता है?

उत्तर- सात्त्विक जनों को ऊर्ध्वलोक की प्राप्ति सहज एवं सुलभ है।

प्र. 142 अधलोक को पाकर किसका मन खिलने लगता है?

उत्तर- पापियों का।

प्र. 143 यथार्थ में नारी और पुरुष का स्वरूप क्या है?

उत्तर- देवी माधवी ने उत्तर देते हुए कहा-स्त्री और पुरुष दो तन नहीं, दो भाव हैं।

प्र. 144 आदर्श नारी में किन विशेष गुणों के होने को अनिवार्य बताया गया है?

उत्तर- प्रेम, धीरज, त्याग, श्रद्धा, धी, समर्पण, ग्राह्यता, अपनत्व एवं संस्कार जैसे नौ विशेष गुणों का आदर्श नारी के लिए अनिवार्य बताया गया है।

प्र. 145 यथार्थ पुरुष के लिए शास्त्रों ने किन गुणों का समर्थन किया है?

उत्तर- ज्ञान, शक्ति, शौर्य, अनुशासन, क्षमा, सम्पन्नता, कर्त्तव्यकर्म, करुणा, न्यायप्रियता, सौम्यता, रस (मृदुभाषा) एवं उदारता आदि बारह गुणों को यथार्थ पुरुष के लिए शास्त्रों ने समर्थन किया है।

प्र. 146 क्या ये बारह गुण हर व्यक्ति में होते हैं?

उत्तर- नहीं। स्वभावानुसार ये द्वादश गुण घटते-बढ़ते रहते हैं।

प्र. 147 स्त्री-पुरुष के मध्य किसे कौनसी नीति दिखायी देती है?

उत्तर- स्त्री-पुरुष दो नहीं बल्कि 'एक' भाव है। यह अभेदनीति केवल श्रीहरि एवं श्रीहर के भक्तों को समान रूप से दिखायी देती है।

प्र. 148 स्त्री और पुरुष को कौनसा पृथक-पृथक भाव माना गया है?

उत्तर- स्त्री को त्याग और पुरुष को कर्मरूपी भाव माना गया है।

प्र. 149 परम सनातन धर्म क्या है?

उत्तर- स्त्री और पुरुष दो नहीं अपितु एक दूसरे के पूरक हैं, इसी परम भाव को परम सनातन धर्म कहा गया है।

प्र. 150 द्वेषी व्यक्ति को किस प्रकार द्वेष से रहित किया जा सकता है?

उत्तर- देवी माधवी ने उत्तर देते हुए कहा - अपने अंदर के मल को मल-मलकर मलमल जैसा बनाकर ही द्वेषी व्यक्ति द्वेष से रहित हो सकता है।

प्र. 151 बुराई और अच्छाई में से हमें किसकी चर्चा करनी चाहिए और किसकी नहीं?

उत्तर- बुराई का बहिष्कार करके मात्र अच्छाई की चर्चा करने से मनुष्य अमृत रूपी सुख से अपनी झोली भर सकता है।

प्र. 152 सुख और आनन्द में किसे श्रेष्ठ माना जाए?

उत्तर- निस्सन्देह आनन्द को।

प्र. 153 कर्मीजन के लिए सुख और आनन्द में से किसकी अनिवार्यता है?

उत्तर- आनन्द की।

प्र. 154 क्यों?

उत्तर- क्योंकि सुख तो वाह्य और क्षणिक है जबकि आनन्द को स्थिर, शाश्वत एवं भागवत् कहा गया है।

प्र. 155 वास्तव में आनन्द क्या है?

उत्तर- स्वरूप का ज्ञान होने को ही आनन्द कहा गया है।

प्र. 156 सुख का आनन्द से क्या संबंध है?

उत्तर- सुख को आनन्द का दास माना गया है।

प्र. 157 पति-पत्नी में किसे श्रेष्ठ माना जाए?

उत्तर- किसी एक को नहीं क्योंकि दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

प्र. 158 नारी (पत्नी) धर्म क्या है?

उत्तर- वात्सल्य, ऊर्जा, वंशवृद्धि, रति तथा सहयोग को नारी हित में सिद्धि-मंत्र माना गया है।

प्र. 159 पति (पुरुष) के लिए कौन-2 से गुण आवश्यक हैं?

उत्तर- पौरुष, पोषण, मान, विवेक एवं ऐश्वर्यादि अनेक गुणों को पुरुष के लिए आवश्यक नहीं वल्कि अनिवार्य माना गया है।

प्र. 160 सुखी जीवन की इच्छा रखने वाले मनुष्यों को क्या करना चाहिए?

उत्तर- ऐसे मनुष्यों को चाहिए कि वे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद एवं मत्सर रूपी छः दुष्टों से सदा दूरी बनाए रखें तथा अन्य आवश्यक सद्गुणों को अपने हृदय में धारण कर लें।

प्र. 161 नारी - पुरुष की क्या है?

उत्तर- नारी को पुरुष की जननी कहा गया है।

प्र. 162 नारी के लिए और क्या कहा गया है?

उत्तर- नारी को समशब्धि, कामना, प्रेरणा, धृति एवं संतुष्टि रूपी यज्ञ का हविष्य भी कहा गया है।

प्र. 163 क्या इसे ही सत्य जानना चाहिए?

उत्तर- हाँ, यही सत्य है। ऐसा जानना चाहिए।

प्र. 164 प्रकृति की सुरक्षा एवं संरक्षण का आधार किसे माना गया है?

उत्तर- स्त्री को स्वयं का ही नहीं वल्कि प्रकृति स्थित समस्त जड़-चेतन की सुरक्षा एवं संरक्षण का आधार माना गया है।

प्र. 165 [redacted]

उत्तर- [redacted]

प्र. 166 जीवन में आनन्द की धार अर्थात् श्रोत क्या है?

उत्तर- जल, वायु, रज, तरु एवं जीव-रक्षा को ही आनन्द की धार कहा गया है।

प्र. 167 संक्षेप में सुख (आनन्द) का सार क्या है? बतलाइए।

उत्तर- न किये जाने योग्य कर्मों का त्याग, हरि भजन तथा पर सेवा ही सुख का सार है ऐसा विश्वास किया जाना चाहिए।

प्र. 168 जगत स्थित जीवों के सुख की मीनार किस पर टिकी हुई है?

उत्तर- ऊपर बतलाये गए सद्गुणों पर ही जगत के जीवों की सुख की मीनार दृढ़ता से टिकी हुई है।

प्र. 169 अंत में द्विज ने क्या किया?

उत्तर- ब्राह्मण शुभ आशीष प्रदान करके अपने धाम को चले गए।

प्र. 170 तब माधवी जी ने क्या किया?

उत्तर- देवी माधवी ठगी सी रह गयी। उन्हें कुछ भी याद नहीं रहा।

प्र. 171 आगन्तुक ब्राह्मण की वास्तविकता क्या थी?

उत्तर- आगन्तुक ब्राह्मण, ब्राह्मण नहीं वल्कि शिवांश अग्र थे। यथार्थतः गणपति की माता उमा के पति।

प्र. 172 परम सत्य क्या है?

उत्तर- विष और अमृत में समान भाव रखते हुए हमें ऐसी कल्पना करनी चाहिए कि प्रत्येक प्राणी में श्रीहर (भगवान) व्याप्त हैं। यह सम्पूर्ण जगत् उन्हीं सत्य सनातन ब्रह्म की ही सत्ता है।

प्र. 173 द्विज एवं माधवी का यह वार्तालाप आपको कैसा लगा?

उत्तर- यह वार्तालाप मात्र वार्तालाप न होकर जीवन की यथार्थता है जिसे हम सबको स्वीकारना चाहिए।

प्र. 174 जगत् की प्रथम विश्व सुन्दरी कौन थी?

उत्तर- नागकन्या माधवी को जगत की प्रथम विश्वसुन्दरी कहा गया था।

प्र. 175 उस समय माधवी की आयु क्या थी?

उत्तर- सोलह वर्ष।

प्र. 176 सोलह वर्षीय नारी के मन की दशा का वर्णन कीजिए?

उत्तर- सोलह वर्ष की आयु में मन में मिलन का भाव जागृत होना स्वाभाविक है।

प्र. 177 देवी माधवी की अष्ट सखियों के नाम बताओ?

उत्तर- चित्रा, सखी, कामना, प्रीति, मोहिनी, स्वप्ना, भावना और नीति।

प्र. 178 देवी माधवी की प्रमुख सखी कौन थी, उन दोनों में परस्पर कैसा सम्बंध था?

उत्तर- चित्रा देवी माधवी की प्रमुख सखी थी। दोनों एक दूसरे पर न्यौछावर रहने को सदैव तत्पर रहती थी।

प्र. 179 एक दिन देवी माधवी के मन में कौन सी भावना जागृत हुई?

उत्तर- वन में जाने की अर्थात् भ्रमण करने की।

प्र. 180 देवी माधवी के भ्रमण पर जाने की तीव्र उत्कण्ठा का क्या कारण था?

उत्तर- क्योंकि अभी तक नागकन्या देवी माधवी को राजमहल से बाहर ही नहीं निकलने दिया गया था।

प्र. 181 नागकन्या देवी माधवी के प्रति प्रहरी की भूमिका किस किसने निभाई थी?

उत्तर- नागकन्या देवी माधवी के माता-पिता ने।

प्र. 182 भ्रमण पर जाने के लिए देवी माधवी ने क्या किया?

उत्तर- भ्रमण पर जाने के लिए देवी माधवी ने अपनी माँ नागेन्द्री से अनुमति प्राप्त करने का विचार किया।

प्र. 183 माँ नागेन्द्री ने पुत्री देवी माधवी को क्या सीख दी?

उत्तर- यही कि ध्यान से वन जाना। अठखेलियाँ मत करना और सखियों के साथ ही वापस आना।

प्र. 184 नागरानी ने और क्या सीख अपनी कन्या देवी माधवी को दी?

उत्तर- नागरानी ने सावधान करते हुए माधवी से कहा - पुत्री! जीव-जन्तु तथा वृक्षों के साथ प्रेम का भाव रखना।

प्र. 185 नागवंश की क्या नीति थी?

उत्तर- हर व्यक्ति के साथ प्रेम व्यवहार रखना ही नागवंश की नीति रही है।

प्र. 186 देवी माधवी के साथ कौन-2 वन को गया?

उत्तर- देवी माधवी के साथ उनकी सत्रह बहनें, अष्ट सखियाँ, सुरक्षा टोली सहित चार सेविकायें भी वन को गईं।

प्र. 187 मणिप्रदेश के सुन्दर वन का नाम बताइए?

उत्तर- (प्राग) ज्योतिषपुर को मणि प्रदेश का सुन्दर वन कहा गया है।

प्र. 188 प्राग्ज्योतिषपुर की सुन्दरता का वर्णन कीजिए?

उत्तर- प्राग्ज्योतिषपुर के उपवन में मन को मोहित करने वाले सुन्दर-2 तरु थे। निकट ही स्वच्छ जल से युक्त लोहित नदी थी। तट पर हाटकेश्वर मन्दिर था। कमल के पुष्पों से सुसज्जित सरोवर भी यहीं था।

प्र. 189 देवी माधवी ने सरोवर पर आकर क्या किया?

उत्तर- देवी माधवी ने सरोवर पर आकर खिले हुए सुन्दरतम कमल के पुष्पों के साथ चम्पा के पुष्पों को भी सहेजने का कार्य किया।

प्र. 190 देवी माधवी ने उन फूलों का क्या किया?

उत्तर- देवी माधवी ने सविधि चम्पा के पुष्पों को शिवलिंग के ऊपर चढ़ाया।

प्र. 191 देवी माधवी ने कमल के पुष्पों का क्या किया?

उत्तर- कमल भ्रमर को प्रिय होता है। माधवी ने उन्हें आगे जाकर अश्रसेन को देने के लिए सहेज कर रख लिया।

प्र. 192 उस समय कौनसा मास था?

उत्तर- श्रावण मास।

प्र. 193 श्रावण मास में प्रकृति क्या रूप दिखाती है?

उत्तर- श्रावण मास में प्रकृति का हर स्वरूप सुहावना तथा मदमय होता है। इस कारण कोमल मन में मादकता का उत्पन्न होना अकारण नहीं है।

प्र. 194 देवी माधवी ने उपवन में आकर क्या करने लगीं?

उत्तर- उपवन में आकर देवी माधवी झूला झूलने लगीं।

प्र. 195 झोंटा लेते समय क्या होता था?

उत्तर- जैसे ही देवी माधवी झोंटा लेती थी कि तरु की झुकी हुई डालियों पर पल्लवित पुष्पों की मृदु पंखुड़ियाँ देवी माधवी के नेत्र, नासिका, ओष्ठ, कपोल एवं मन पर घात करने लगती थी।

प्र. 196 प्रकृति के इस कृत्य से नारी मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- उस समय ऐसा प्रतीत होता है मानो कामदेव ने कामबाण का संधान कर दिया हो।

प्र. 197 तब क्या होता है?

उत्तर- काम की जागृति होने से शुभ मति भ्रमित होने लगती है।

प्र. 198 देवी माधवी की मदमय दशा देखकर अन्य की क्या गति हुई?

उत्तर- सब आपस में चर्चा करने लगीं कि राजकुमारी से उनकी इस मनोवृत्ति का कारण पूँछा जाए।

प्र. 199 क्या वे देवी माधवी की मनोदशा का मूल कारण जान सकीं?

उत्तर- नहीं। जिसे अपना कोई होश ना हो, वो भला अन्य के विषय में क्या बतला सकती है?

प्र. 200 झूलने के उपरांत देवी माधवी ने क्या किया?

उत्तर- अधिक झूलने के कारण देवी माधवी थक गई और एक वृक्ष के नीचे गिरे हुए पल्लवों का गद्दा बनाकर तथा पुष्पों के तकिये का सिरहाना लेकर मृदु स्वप्न के साथ लेट गई।

प्र. 201 देवी माधवी के लेटे होने पर कौन-सी घटना घटी?

उत्तर- देवी माधवी को लेटा हुआ देखकर देवराज इन्द्र वहाँ आकर देवी माधवी के मुखमण्डल की ओर अपलक दृष्टि से निहारने लगे।

प्र. 202 देवराज इन्द्र ने देवी माधवी के समक्ष कैसा प्रस्ताव रखा?

उत्तर- देवराज इन्द्र ने देवी माधवी से कहा कि तुम मेरी पत्नी बन जाओ।

प्र. 203 तब, देवी माधवी ने देवराज इन्द्र को क्या उत्तर दिया?

उत्तर- देवी माधवी ने देवराज इन्द्र को उत्तर दिया कि तुम तो क्या मैं किसी भी देवता का वरण नहीं करूँगी।

प्र. 204 देवराज इन्द्र ने क्या कहा?

उत्तर- कुपित इन्द्र खिसियाकर अपने लोक को चला गया।

प्र. 205 देवराज इन्द्र के जाने के बाद देवी माधवी ने क्या किया?

उत्तर- देवराज इन्द्र के जाने के बाद देवी माधवी मन परिवर्तन हेतु सखियों सहित सरोवर में स्नान करने चली गई।

प्र. 206 स्नान करने के बाद देवी माधवी ने क्या किया?

उत्तर- स्नानोपरांत देवी माधवी सखियों सहित सरोवर के निकट आकर बैठ गई।

प्र. 207 सरोवर पर कौन-सी घटना घटी?

उत्तर- सरोवर पर निरीह प्राणियों की चीत्कार सुनाई पड़ी, क्योंकि तभी एक भयानक व्याघ्र ने उन पर हमला कर दिया था।

प्र. 208 यह चीत्कार किसकी थी?

उत्तर- यह करुण चीत्कार गौ, बछड़ा, साँड, मृग आदि की थी जो अपनी तृष्णा को शांत करने के लिए सरोवर पर आए हुए थे।

प्र. 209 निरीह प्राणियों की रक्षा कैसे हुई?

उत्तर- कहीं दूर से एक बाण आया जिसने झपट्टा मारते हुए व्याघ्र के चारों ओर बाणों का घेरा बना दिया।

प्र. 210 यह वीर कौन था?

उत्तर- युवा अग्रसेन।

प्र. 211 इस घटना को क्या नाम देना चाहिए?

उत्तर- इस घटना को करुणा, अहिंसा, जीव-हित तथा ममत्त्व भाव से युक्त "समता" का नाम देना चाहिये।

प्र. 212 इस घटना ने देवी माधवी के मन पर क्या प्रभाव छोड़ा?

उत्तर- देवी माधवी उस वीर को अपना कोमल मन दे बैठी।

प्र. 213 वीर और देवी माधवी की दशा का वर्णन कीजिए?

उत्तर- वीर अग्र और देवी माधवी दोनों एक दूसरे की ओर अपलक निहारने लगे मानो वो एक दूसरे के लिए ही बने हों।

प्र. 214 अन्ततोगत्वा क्या हुआ?

उत्तर- देवी माधवी घायल मन के साथ सखियों, बहिनों आदि के साथ राजमहल को लौट चलने को बाध्य हो गई।

प्र. 215 घर पर नागराज ने देवी माधवी की माँ से क्या कहा?

उत्तर- नागराज ने देवी माधवी की माँ नागेन्द्री से कहा कि देवराज इन्द्र पुत्री माधवी से विवाह करने को उत्सुक है।

प्र. 216 तब देवी माधवी ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर- देवी माधवी ने उत्तर दिया कि उस युवा वीर के अतिरिक्त अन्य कोई मेरा पति नहीं होगा।

प्र. 217 देवराज इन्द्र को अस्वीकार करने का कौन-सा कारण था?

उत्तर- देवराज इन्द्र को अस्वीकार करने का प्रमुख कारण था कि मनुष्यों द्वारा किए गए तप और दान के फल को इन्द्र छीन लेते हैं। किसी की उन्नति देखकर इन्द्र का सिंहासन डोलने लगता है। गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या को छल से भोगने वाला इन्द्र ही तो है। देवी माधवी ने इन्द्र को कामुकता का रोगी कहकर भी सम्बोधित किया था।

प्र. 218 देवी माधवी ने देवराज इन्द्र के विषय में और क्या कहा?

उत्तर- भला ऐसे कृतघ्न इन्द्र का वरण कोई नारी कैसे कर सकती है?

प्र. 219 नागों में से ही पति चुनने पर देवी माधवी ने क्या कहा?

उत्तर- देवी माधवी ने अपने पिताजी से कहा-कि जिनका मुख घातक विष से सदा भरा रहता हो, ऐसे विषधारी का वरण कोमल मन वाली नारी के लिए कदाचित उपयुक्त प्रतीत नहीं होगा।

प्र. 220 देवी माधवी के इस विश्लेषण का कारण बताइए?

उत्तर- नारी ऐसा पति चाहती है जो हिंसक ना हो, प्रेम करे।

प्र. 221 देवी माधवी की विरहजनित दशा को देखकर माता नागेन्द्री द्वारा कारण पूछे जाने पर पुत्री ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर- पुत्री माधवी ने स्वयं की विरहजनित दशा का कारण बताते हुए कहा कि माते! सरोवर के निकट मुझे एक दिव्य पुरुष के दर्शन हुए। उनके हिंसारहित शौर्य पर मेरा मन मुग्ध हो गया है।

प्र. 222 देवी माधवी ने उस वीर पुरुष की तुलना किस-किससे की?

उत्तर- देवी माधवी ने कहा, माते! मेरे विचार से वह दिव्य युवा देवता नाग, नर, किन्नर, यक्ष, गंधर्व तथा ऋषियों से भी श्रेष्ठ है।

प्र. 223 देवी माधवी ने अग्रसेन जी की वीरता का बखान किस प्रकार किया?

उत्तर- हे माते! साधारणजन का नागलोक में प्रवेश कदाचित् सम्भव नहीं है। भले ही नाग अपनी शक्ति में सौ गुणा वृद्धि कर लें, फिर भी वे उस अकेले वीर के सम्मुख नहीं टिक सकते।

प्र. 224 यह कहकर एक नारी ने क्या सिद्ध किया?

उत्तर- नारी ने सिद्ध किया कि जब वह स्वयं को किसी पर समर्पित कर देती है तब वह बस यही कहती है कि उसके अतिरिक्त अन्य कोई मेरा पति नहीं हो सकता।

प्र. 225 षोडसी नारी के इस हठ को आप कैसे आकेंगे?

उत्तर- षोडसी नारी का यह हठ एक नारी का विश्वास एवं दृढ़ निश्चय सिद्ध करने वाला है। विवेकबुद्धि से लिया गया निर्णय पछताने का अवसर नहीं देता। दूरदर्शी देवी माधवी का यह हठ सर्वसमाज के कल्याण की प्रधानता ही सिद्ध करता है।

प्र. 226 देवी माधवी के हठ की माता-पिता पर क्या प्रतिक्रिया हुयी?

उत्तर- युवापन का हठ सदा ही उसके माता-पिता को झुकाता रहा है। यहाँ भी ऐसा ही हुआ।

प्र. 227 प्रफुल्लितमना देवी माधवी ने किस देवी का व्रत धारण किया था?

उत्तर- माता जगदम्बे का। यह कहकर कि हे माता! यदि तू मेरी मनचीती सिद्ध कर देगी तो मैं मंदिर में चित्र रखकर तेरा अनुष्ठान करूँगी।

प्र. 228 यह अनुष्ठान किस तिथि को किया जाना निश्चित हुआ?

उत्तर- श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को। तभी से हरियाली तीज को 'मनोकामना सिद्ध' त्यौहार कहकर मनाया जाने लगा।

प्र. 229 देवी माधवी का विवाह किसके साथ सम्पन्न हुआ था?

उत्तर- नागकन्या देवी माधवी का विवाह अग्रोहा नरेश अग्रसेन जी के साथ सम्पन्न हुआ था।

प्र. 230 अग्र माधवी का विवाह किस तिथि को सम्पन्न हुआ था?

उत्तर- माघ मास के शुक्ल पक्ष की पञ्चमी तिथि को।

प्र. 231 अग्रोहा नरेश अग्रसेन जी की बारात किस समय निकाली गई थी?

उत्तर- दिन के बारह बजे।

प्र. 232 बारात दिन में क्यों निकालनी चाहिए?

उत्तर- क्योंकि सूर्यमहाराज के आशीर्वाद से बैंड-बाजा से उत्पन्न प्रदूषण और कृत्रिम प्रकाश से बचा जाना सुखी समाज के लिए आवश्यक है।

प्र. 233 अग्रमाधवी के विवाहोपरांत नागराज महीधर ने जामाता के समक्ष कौनसा प्रस्ताव रखा था?

उत्तर- नागराज महीधर ने प्रस्ताव रखा - अग्रसेन जी! यदि आप मेरी अन्य सत्रह पुत्रियों को भी अपनी भार्या के रूप में स्वीकार कर लें तो मैं स्वयं को बड़भागी मानूँगा।

प्र. 234 इस पर अग्रसेन जी ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर- अग्रसेन जी ने कहा-पिताश्री! मेरी पत्नी की बहिनें मेरे लिए बहिन के समान हैं। इस प्रकार एक भाई का बहिनों से विवाह करना किस प्रकार शास्त्र सम्मत है। नहीं, मेरे लिए तो कदापि नहीं।

प्र. 235 देवी माधवी की इस पर क्या प्रतिक्रिया हुई थी?

उत्तर- देवी माधवी का शीष गर्व से उन्नत हो उठा। उपस्थितजन देवी माधवी के भाग्य एवं विवेकबुद्धि की प्रशंसा करने लगे।

प्र. 236 नागराज महीधर ने जामाता को दहेज में क्या भेंट किया था?

उत्तर- नागवंश के सर्वोत्तम तल-जहाँ यह विवाह सम्पन्न हुआ था-का नाम 'अग्रतल' रख दिया। आज का अगरतला कल का अग्रतल ही है।

प्र. 237 आग्रेयपुरी में बहूरानी का स्वागत किसने किया और क्या कहा था?

उत्तर- राजमाता वैदर्भी भगवती ने लघुसुत शौर्यसेन की उपस्थिति में बहू का स्वागत करते हुए कहा कि तू मेरी बहू नहीं, मेरी पुत्री है।

प्र. 238 पुत्री शब्द सुनकर नववधू की क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर- बहू फफक-फफक कर रो पड़ी।

प्र. 239 परिवारों के टूटने का प्रमुख कारण क्या है?

उत्तर- परिवारों के टूटने का प्रमुख कारण है 'बहू' को पुत्री के रूप में स्नेह प्रदान ना करना।

प्र. 240 क्या देवी माधवी एक आदर्श भारतीय नारी है?

उत्तर- जी हाँ! देवी माधवी वधु, भाभी, पत्नी, राजमाता, माता, सासू माँ एवं शासक-प्रशासक जैसे विभिन्न रूपों में निःसन्देह अनुकरणीय एवं आदर्श भारतीय नारी हैं।

प्र. 241 देवराज इन्द्र ने किस प्रकार देवी माधवी से बदला लिया?

उत्तर- आग्रेयपुरी में सूखा करके/कभी अति जल वृष्टि करके तो कभी अग्निदेव के द्वारा आग्रेयपुरी को जलाकर।

प्र. 242 विवेकी माधवी ने किस प्रकार उक्त संकटों का सामना किया?

उत्तर- i) कृषि भूमि को एक दूसरे से जोड़कर, नहरों से बद्ध करके, जल स्रोतों से आवश्यक जल निकाल करके;

ii) राज्य में सूखा पड़ने पर माधवी जी ने कुएँ, बावड़ी, सरोवर, पोखर आदि खुदवाकर जल संचय करने का भी निर्देश दिया;

iii) अग्निदेव को परास्त करने के लिए राज्य के अन्नागार, कोषागार, जलागार सहित कल्याणकारी कार्यों को सर्वहित में उदारता से खोल दिया गया।

प्र. 243 पराजित इन्द्र ने क्या कहा?

उत्तर- पराजित इन्द्र ने कहा - अग्रसेन! जहाँ देवी माधवी जैसी विदुषी हों, वहाँ क्यों कर दुःखों का आगमन होगा।

प्र. 244 देवराज इन्द्र के परास्त होने का क्या कारण था?

उत्तर- देवराज इन्द्र के परास्त होने का प्रमुख कारण था-देवी माधवी द्वारा पति से कुलदेवी महालक्ष्मी जी का व्रत करके उनसे शक्ति प्राप्त करवाना।

प्र. 245 अग्रवंश की समृद्धि हेतु देवराज इन्द्र ने अग्र देवी माधवी को क्या भेंट दी?

उत्तर- 'मधुशालिनी' नामक अप्सरा अर्थात् मधु (मृदुवाणी) और 'शालिनी' अर्थात् शालीनता। इन दो सद्गुणों से अग्रवंश गत 5142 वर्षों से नित नव वृद्धि को प्राप्त करता आ रहा है।

प्र. 246 अग्र माधवी के कितने पुत्र-पुत्री उत्पन्न हुए? नाम बतलाइए?

उत्तर- 18 पुत्र और एक पुत्री। पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं:- विभु, विक्रम, अजय, विजय, अनन्त, नीरज, अमर, नगेन्द्र, सुरेश, श्रीमंत, सोम, धरणीधर, अतुल, अशोक, सुदर्शन, सिद्धार्थ, गणेश्वर और लोकपति एवं पुत्री का नाम 'ईश्वरी' था।

प्र. 247 पुत्री एवं पुत्रों का विवाह किस किसके साथ सम्पन्न हुए? सभी के नाम बतलाइए?

उत्तर- नागराज वासुकि की अठारह कन्याओं के साथ अग्रमाधवी के अठारह पुत्रों के विवाह हुए थे। पुत्री का विवाह काशीनरेश के पुत्र 'महेश' के साथ सम्पन्न हुआ था।

प्र. 248 अग्र माधवी की पुत्रवधुओं के नाम बतलाइए?

उत्तर- अग्र माधवी की पुत्रवधुओं के नाम वरीयताक्रम से इस प्रकार हैं:- चित्रा, शुभा, शीला, कांति, स्वाति, रेणुका, क्षमा, शिरा, सखी, श्रीमाला, शांति, प्रिया, सुकन्या, सावित्री, हेमा, तारा, नागमणी तथा प्रभावती।

प्र. 249 पुत्रवधू का चयन करते समय क्या-क्या देखा जाना आवश्यक है?

उत्तर- वधु का सच्चरितत्र, श्रेष्ठ कुलीन वंश और उसके अन्दर के संस्कार।

प्र. 250 धन के विषय में क्या विचार बतलाए गए हैं?

उत्तर- धन प्रमुख नहीं गौण है। विवेकी एवं कर्मशील व्यक्ति को अर्थ प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता। धन तो आता जाता रहता है।

प्र. 251 माधवी की देवरानी एवं उनके पुत्रों के नाम बताइये?

उत्तर- अनंतनाग की पुत्री दक्षिणी माधवी की देवरानी थी। इनको पाँच पुत्रों की माता कहा गया है।

प्र. 252 नारी के पथभ्रष्ट होने पर क्या होता है?

उत्तर- स्त्रियोचित कर्मपथ से डिग जाने पर उस कुल में वर्ण-संकरता का आना स्वाभाविक है जिससे सम्पूर्ण कुल नष्ट हो जाता है।

प्र. 253 नारी के संस्कारी होने पर क्या होता है?

उत्तर- यदि नारी सज्जन और संस्कारी है तो वह पितरों के हव्य-कव्य को प्रदान कर तृप्ति प्रदान करने वाली होती है। नाना सुख, समृद्धि तथा वैकुण्ठ प्राप्ति का मार्ग भी मोक्षप्रदाता नारी के द्वारा ही माना गया है।

प्र. 254 सूक्ष्म में, नारी को क्या माना जाये?

उत्तर- सूक्ष्म में, नारी को 'धर्म का आधार' माना जाना ही उचित होगा।

प्र. 255 संसार किस नारी से सुख का अनुभव करता है?

उत्तर- धर्म, कर्म, नय, नीति एवं सदाचार से युक्त नारी को पाकर संसार निश्चित ही सुख का अनुभव करता है।

प्र. 256 नारी के कर्त्तव्यों का वर्णन कीजिए?

उत्तर- धर्म, अर्थ, काम, सेवा, कुलवृद्धि, कुलसेवा, स्वर्ग प्राप्ति - आदि आदर्शों को नारी के प्रमुख कर्त्तव्य माना गया है।

प्र. 257 सुखी गृहस्थी के लिए क्या किया जाना आवश्यक है?

उत्तर- पति-पत्नी के मध्य सम्बन्धों में सच्चे समन्वय के साथ-2 सदाचार से युक्त कर्मों का पालन करने को सुखी गृहस्थी के लिए आवश्यक माना गया है।

प्र. 258 किस प्रकार की नारी को महासौभाग्यशाली माना जाना चाहिये?

उत्तर- जो नारी मन, वचन, कर्म से पति के अनुसरण करने को ही अपना धर्म मानती हो, ऐसी नारी को महाभागा, महासौभाग्यशाली, सुवन्दित तथा वंशवृद्धि का मूल कारण माना जाना चाहिये।

प्र. 259 व्यक्ति की कुलीनता-अकुलीनता को मापने का क्या तरीका है?

उत्तर- व्यक्ति का चरित्र।

प्र. 260 सबसे बड़ा धर्म किसे कहा गया है?

उत्तर- अहिंसा को।

प्र. 261 'वैश्य धर्म' क्या है?

उत्तर- मन-वचन-कर्मों में अहिंसा का सत्यता से क्रियान्वयन ही 'वैश्यधर्म' है।

प्र. 262 'मानव धर्म' किसे कहा गया है?

उत्तर- 'वैश्यधर्म' अर्थात् 'पोषण' को ही मानव धर्म की संज्ञा दी गई है।

प्र. 263 क्या देवी माधवी जी में उक्त गुण विद्यमान थे?

उत्तर- निस्सन्देह! पति के सहयोग तथा स्वयं की संकल्प-शक्ति से उक्त सभी गुण देवी माधवी में विद्यमान थे।

प्र. 264 अग्रवालों में कितने गोत्र होते हैं, नाम बताइए?

उत्तर- अग्रवालों में अठारह गोत्र हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं:-
गर्ग, बिंदल, कुच्छल, गोयल, गोयन, जिंदल, बंसल, नाँगल, भंदल, सिंघल, मित्तल, तिंगल, मधुकुल, कंसल, तायल, धारण, मंगल और ऐरण।

प्र. 265 आधा गोत्र कौन सा है?

उत्तर- 'ऐरण' ही आधा गोत्र है।

प्र. 266 गोत्रों का विभाजन किस प्रकार किया गया है?

उत्तर- 18 पुत्रों को एक-एक गोत्र देकर गोत्रों का विभाजन किया गया है।

प्र. 267 अग्र माधवी के 18 पुत्रों को किस प्रकार गोत्रों में स्थापित किया गया?

उत्तर- अग्र माधवी के 18 पुत्रों को पृथक पृथक गोत्र में स्थापित किया गया।

प्र. 268 गोत्रों की आवश्यकता क्यों हुई?

उत्तर- ''वंशकर यज्ञ'' कराने वाले ऋत्विजों को सम्मान प्रदान करने के लिए तथा स्वकुल को व्यवस्थित कर भावी पीढ़ी में रक्त-शुद्धता बनाए रखने के लिये गोत्रकृम करने की आवश्यकता हुई।

प्र. 269 किस ऋषि से किस गोत्र का निर्माण हुआ?

उत्तर- गर्ग ऋषि से 'गर्ग', वशिष्ठ ऋषि से 'बिंदल', कश्यप ऋषि से 'कुच्छल', गौतम ऋषि से गोयल, गोभिल ऋषि से गोयन, जैमिनि ऋषि से जिंदल, वात्सल ऋषि से बंसल, नाँगल ऋषि से नागल, भारवि ऋषि से 'भंदल', शाण्डिल्य ऋषि से 'सिंघल', मैत्रेय ऋषि से 'मित्तल', ताण्ड्य ऋषि से 'तिंगल', मुद्गल ऋषि से 'मधुकुल', कौशिक ऋषि से 'कंसल', तैत्रेय

ऋषि से 'तायल', धौम्य ऋषि से 'धारण', माण्डव ऋषि से 'मंगल' तथा और्व ऋषि से 'ऐरण' गोत्र का निर्माण हुआ।

प्र. 270 माधवी के पुत्रों के गोत्र बताइए?

उत्तर- विभु का गर्ग, विक्रम का बिंदल, अजय का कुच्छल, विजय का गोयल, अनन्त का गोयन, नीरज का जिंदल, अमर का बंसल, नगेन्द्र का नागल, सुरेश का भंदल, श्रीमंत का सिंघल, सोमसेन का मित्तल, धरणीधर का तिंगल, अतुल का मधुकुल, अशोक का कंसल, दर्शन का तायल, सिद्धार्थसेन का धारण, गणपति का मंगल तथा लोकपति का ऐरण गोत्र में दीक्षित किया गया।

प्र. 271 आधा गोत्र किस प्रकार बना?

उत्तर- वंशकर यज्ञ के अन्तिम अर्थात् अठारहवें यज्ञ में क्षत्रिय धर्मानुसार पूर्णाहुति किए बिना उसे बीच में ही छोड़े जाने से आधे गोत्र का निर्धारण हुआ।

प्र. 272 अग्रवालों के पुत्र-पुत्रियों के संबंध इन अठारह गोत्रों में ही होने की परंपरा से क्या ये भाई-बहिन नहीं हुए?

उत्तर- नहीं।

प्र. 273 तो फिर पुत्रों को गोत्रीकृत क्यों किया गया?

उत्तर- पुत्र-पौत्रादिकों की संख्या शताधिक होने से उत्पन्न व्यवस्था भंग न हो जाये अर्थात् अग्रवंशजों को सुव्यवस्थित करने के लिए पुत्रों को गोतृकृत किया गया।

प्र. 274 पति-पत्नी के स्थान पर इन्हें भाई-बहिन क्यों नहीं माना जाना चाहिए?

उत्तर- क्योंकि पुत्रों के गोत्रीकरण से पूर्व विभिन्न जनपदों के 18 प्रधानों को गोत्रीकृत किया गया था। बाद में आग्रेय गणराज्य को 18 जनपदों में विभक्त करके 18 युवराजों को राज्याध्यक्ष के पद पर सुशोभित कर पूर्व जनपदों को उनसे जोड़ दिया गया था।

प्र. 275 यानि इस प्रकार के सम्बन्ध से पति-पत्नी को भाई-बहिन नहीं माना जाना चाहिए?

उत्तर- नहीं। मनुष्य मनु-शतरूपा की सन्तान है। मनु की तीन पुत्रियों और दो पुत्रों से ही मनुष्य वृद्धि को प्राप्त होता आया है। वैसे ही अग्र-माधवी के 18 पुत्रों की सन्तति में वृद्धि हो जाने पर रक्त संबंधों की पवित्रता पर कोई संशय नहीं करना उचित होगा। ऐसा सोचना भी पाप है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मामा के गोत्र का आश्रय लेकर स्व-गोत्र में विवाह करने को भी अनुचित

प्र. 276 नागकन्या माधवी एवं उनकी बहिनों के वरों के पिता सहित नाम बताइए?

उत्तर-

	कन्या का नाम	वर का नाम	वर के पिता का नाम
1.	माधवी	अग्रसेन	वल्लभसेन
2.	श्रद्धा	विस्फोटक	कर्कोटक
3.	शुचि	रौद्रोटक	कर्कोटक
4.	धी	उत्कट	कर्कोटक
5.	शक्ति	विक्रांग	चित्रांग
6.	आभा	श्वेतांग	चित्रांग
7.	नीर	विचित्रांग	चित्रांग
8.	जलदा	नागनाथ	मणिनाथ
9.	अनु	सर्पनाथ	मणिनाथ
10.	प्रिया	स्वर्णनाथ	अनन्तनाग
11.	ऊर्जा	अमिय	अनन्तनाग
12.	दामिनी	धूम्र	कल्माष
13.	वृद्धि	विकट	कल्माष
14.	प्रकृति	विद्रुप	कल्माष
15.	प्रवृत्ति	विषदंत	सर्पदंश
16.	सौम्या	पाशदंत	सर्पदंश
17.	आशा	विक्राल	कालिय
18.	सामर्थ्य	भुजंग	कालिय

प्र. 277 माधवी द्वारा क्षत्राणी धर्म त्यागने का क्या कारण था?

उत्तर- यज्ञों में दी जाने वाली पशुबलि से उत्पन्न हिंसा अर्थात् निरीह प्राणियों का असमय एवं क्रूर वध जैसा घृणित एवं निंदनीय अकर्म देवी माधवी द्वारा क्षत्राणी धर्म त्यागने का प्रमुख कारण था।

प्र. 278 वैश्य धर्म कर्म क्या है?

उत्तर- 'पोषण', धर्म, करुणा, क्षमा, स्नेह, दान, सुरक्षा, अहिंसा, ममत्व, समत्व, सर्वलोकहित, प्रकृति सुरक्षा, हम सब एक ही परम पिता की संतान हैं, कृषि-गोपालन-वाणिज्यादि व्यावसायिक कार्यों में संलग्नता वैश्यों के प्रमुख धर्म कर्म हैं।

प्र. 279 वंशकर यज्ञ किस तिथि को प्रारंभ किया गया था?

उत्तर- वैशाख मास में शुक्ल पक्ष की गुरुवार को आश्लेषा नक्षत्र में वंशकर यज्ञ प्रारम्भ किया गया था।

प्र. 280 इस 'त्याग दिवस' को किस रूप में मनाना चाहिए?

उ. अहिंसा अर्थात् वैश्य दिवस के रूप में।

प्र. 281 सुलक्षणा नारी के लिये किन-किन गुणों को शास्त्रों ने उचित माना है?

उत्तर- वात्सल्य, धैर्य, पोषण, धर्म, कर्म, सर्वसन्तुष्टि, गृहस्थ धर्मपालन, शस्त्र-शास्त्र ज्ञान, राष्ट्रभक्ति, सामाजिक उत्तरदायित्व, पति प्रीति, मातृ-पितृ भक्ति, सदाचार, समर्पण, संस्कार तथा करुणा सहित क्षमादान आदि गुणों को सुलक्षणा नारी हेतु शास्त्रों में उचित माना गया है।

प्र. 282 वर्तमान नारी के लिए आपका क्या संदेश है?

उत्तर- भ्रूणहत्या का निषेध। क्योंकि नारी के अभाव में विकास-प्रक्रिया के अवरुद्ध होने से सृष्टि-चक्र की निरंतरता का बने रहना सम्भव नहीं है।

प्र. 283 वैश्य राज्य के सबसे बड़ा शत्रु कौन-कौन थे?

उत्तर- क्षत्रिय राजा दिग्गजसेन, राजा रतीन्द्र तथा अन्य कुछ असमृद्ध राजपरिवारों का वैश्य राज्य के प्रति स्वाभाविक शत्रु भाव एवं दुराग्रह था।

प्र. 284 इन राजाओं ने क्या किया? किसने इन्हें बंदी बनाकर राज दरबार में प्रस्तुत किया?

उत्तर- इन राजाओं ने धोखे से अग्रोहा पर आक्रमण कर दिया जिन्हें विभुसेन ने बंदी बनाकर राजदरबार में प्रस्तुत किया।

प्र. 285 बंदी राजाओं के साथ कैसा व्यवहार किया गया?

उत्तर- बंदी राजाओं के साथ मित्रता वाला व्यवहार किया गया। छीनी गई सम्पत्ति के साथ अग्रोहा राज्य द्वारा बहुत सी भेंट देकर इन्हें सम्मानित भी किया गया।

प्र. 286 'शत्रु के प्रति करुणा का दान' यह सिद्धांत किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया था?

उत्तर- नागकन्या देवी माधवी के द्वारा। यह कहलवाकर कि आग्रेय गणराज्य का एक ही सिद्धांत है "शत्रुतारहित शासन पद्धति"।

प्र. 287 माधवी रानी को 'महारानी' की संज्ञा कब दी गई?

उत्तर- क्षत्रिय राजा दिग्गजसेन द्वारा यह कहकर कि हे राजन! राजा तो हम हैं। आप राजा नहीं, राजाओं के भी राजा हैं। तभी से अग्रसेन जी को "महाराजा" और देवी माधवी को "महारानी माधवी" कहा जाने लगा।

प्र. 288 राज्य की विषमता को दूर करने के लिए क्या किया गया?

उत्तर- 'महारानी माधवी' ने महाराजा अग्रसेन जी को विश्वास में लेकर "एक रुपया एक ईंट" का कानून बनवाया।

प्र. 289 'एक रूपया एक ईंट' से आपका क्या आशय है?

उत्तर- अग्रोहा राज्य में बसने की इच्छा से आने वाले अभावग्रस्त आगंतुकों को रहने के लिए हर घर से एक ईंट और एक स्वर्ण मुद्रा भेंट दिलवाना ताकि उसके पास स्वयं के लिये आवास और व्यापार करने के लिए एक लाख स्वर्ण मुद्राओं का भण्डार हो जाए जिससे वे घरवाले और व्यापारी कहलाए जाएँ। अग्र परम्परा का दृढ़ता से पालन प्रथम शर्त होती थी।

प्र. 290 कुशल प्रशासिका के रूप में 'महारानी माधवी'' का चरित्र-चित्रण कीजिए?

उत्तर- कुशल प्रशासिका एवं मार्गदर्शिका के रूप में महारानी माधवी पृथ्वीलोक की महानतम विभूति हैं। समत्व, स्त्रियों के लिए शस्त्र एवं शास्त्र शिक्षा की अनिवार्यता, भ्रूण-हत्या का निषेध, कानून का दृढ़ता से कठोर पालन, न्याय-पद्धति में समानता का भाव, विद्वान, कवि, लेखक, पत्रकार, संत, राष्ट्रभक्त, समाज-हितैषियों की आजीविका राज्य द्वारा सुरक्षित होनी चाहिये आदि विचारधाराओं को साथ लेकर जन-जन की प्रसन्नता का ध्यान रखकर निश्चित ही महारानी माधवी त्रिलोक में मैत्रीभाव स्थापित करने वाली एकमात्र महिला हैं। नारी सशक्तिकरण के आधुनिक दौर में हर स्त्री को देवी माधवी जी जैसा बनना चाहिए साथ ही करके दिखाना भी चाहिये तभी नारी सुखी एवं आनन्दमय जीवन जी सकने में सक्षम हो सकती है।

प्र. 291 महारानी माधवी का परलोक गमन कब और कहाँ हुआ?

उत्तर- देवी महारानी माधवी ने आश्विन मास की अमावस्या को हरिद्वार के आनंद घाट पर अपनी नश्वर देह का त्याग किया था।

प्र. 292 महारानी माधवी कुल कितने वर्ष तक पृथ्वी पर रही थीं?

उत्तर- महारानी माधवी एक सौ बारह वर्ष तक पृथ्वी पर रही थीं।

प्र. 293 उस समय महाराजा अग्रसेन जी की आयु कितनी थी?

उत्तर- एक सौ सत्रह वर्ष की।

प्र. 294 महाराजा अग्रसेन जी का जीवन कुल कितने वर्ष का रहा था?

उत्तर- 118 वर्ष का। महाराजा अग्रसेन जी ने देवी महारानी माधवी जी के परलोक गमन के एक वर्ष बाद कार्तिक शुक्ल चौदस को महालक्ष्मी की गोद में बैठकर पाँच वर्ष के शिशु के रूप में वैकुण्ठ को प्रस्थान किया था।

प्र. 295 'देवी माधवी महिमा' ग्रंथ के विषय में आपका क्या मत है?

उत्तर- 'देवी माधवी महिमा'' अर्थात् नारी की महिमा नामक ग्रंथ नारी-चरित्र निर्माण के लिए एक सशक्त माध्यम है। हमें इस ग्रंथ के हर शब्द को,

उमांश देवी महिमा की अमूल्य शिक्षा मानकर अपनी जीवन पद्धति बनाना चाहिए।

प्र. 296 अग्र नारियों की चारित्रिक दृढ़ता के लिए और क्या-2 आवश्यक है?

उत्तर- देवी माधवी चालीसा, आरती एवं ग्यारह मंत्रों का दैनिक पठन-पाठन मात्र अग्रनारियों के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण स्त्री जाति के लिए अति आवश्यक सुरक्षा चक्र है।

प्र. 297 "देवी माधवी" के चरित्र पर लिखा गया प्रथम ग्रंथ कौन सा है?

उत्तर- सम्पूर्ण अग्र जगत में गत् 5138 वर्षों में आग्रेय गणराज्य की महारानी माधवी के दिव्य एवं प्रेरक चरित्र पर लिखा गया प्रथम ग्रंथ "देवी माधवी महिमा, चालीसा एवं आरती" है।

प्र. 298 "देवी माधवी महिमा" ग्रंथ के रचनाकार का नाम बताइए?

उत्तर- "देवी माधवी महिमा" ग्रंथ के रचनाकार आगरावासी "आचार्य विष्णुदास अग्रवाल" शास्त्री जी हैं।

प्र. 299 लेखक का समाज में क्या स्थान है?

उत्तर- आचार्य विष्णुदास जी ऐसे प्रथम अग्रलेखक एवं विद्वान हैं जिन्होंने "अग्रसेन भागवत, देवी माधवी महिमा एवं महाराज विभु" आदि ग्रंथों की रचना की है। लेखक को यह गौरव प्राप्त है कि अग्रसेन भागवत को व्यासपीठ से वाचन करके उन्होंने अन्य विद्वानों को अग्रकथा कहने का मार्ग प्रशस्त किया। यानि लेखक को विश्व के प्रथम अग्र भागवत्ताचार्य के रूप में माने जाने में किसी को कोई संकोच नहीं होना चाहिए।

प्र. 300 महारानी माधवी जी के अन्य नाम कौन-2 से हैं?

उत्तर- त्रिलोक अधीश्वरी, समतेश्वरी, शिवाग्र हृदयेश्वरी, नागकुलराजिनी, अग्रवंशआधारिणी, देवकुल प्रियेश्वरी, उमारूपाय, आग्रेय गणराज्य महारानी, महामाता, आनन्द प्रदाता, प्रेरक, समृद्धिदा आदि अन्य नामों से भी महारानी माधवी जी को हमें अपने हृदय में धारण करना चाहिए।

देवी माधवी के पवित्र 11 मंत्र

1. ॐ देवी माधवीयै नमः
2. ॐ आग्रेय महामातायै नमः।
3. ॐ अग्रवंशेश्वरीय नमः।
4. ॐ नागवंश आभाय नमः।
5. ॐ देवकुल अपेक्षाय नमः।
6. ॐ भू आधाराय नमः।
7. ॐ सर्व सुःख नमः।
8. ॐ नारी सौभाग्याय नमः।
9. ॐ शुभ बुद्धि दैव्यै नमः।
10. ॐ कृपेश्वरीय नमः।
11. ॐ श्री सुत समृद्धि प्रदाताय नमः।

शुभकामनाएँ

श्री अनिल गुप्ता (सीटू)
(जिलाध्यक्ष) अखिल भारतीय युवा वैश्य महासम्मेलन, सोनीपत

स्व. बौहरे विशम्भरनाथ बंसल
(आदर्श पिता)
आगरा

स्व. श्रीमती प्राण देवी बंसल
(आदर्श माता)
आगरा

श्रीमती ममता सिंघल
(संस्थापक अध्यक्ष)
हरि बोल सेवा समिति (रजि.), आगरा

श्री भोला नाथ अग्रवाल
(मुख्य संरक्षक)
हरि बोल सेवा समिति (रजि.), आगरा।

श्री जगदीश गर्ग
(समाज सेवी)
255, सेक्टर-15, सोनीपत

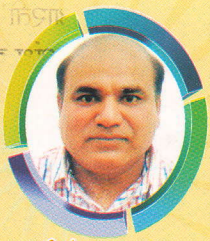

श्री शंकर लाल गुप्ता
(समाज सेवी)
तीरथ मार्केट, सोनीपत

श्री जितेन्द्र गुप्ता
(समाज सेवी)
सोनीपत

श्री अनिल गुप्ता
(जिलाध्यक्ष) अखिल भारतीय युवा अग्रवाल सम्मेलन, सोनीपत

श्री सुशील गोयल
शौप्पर्स प्लाजा, जी.टी.रोड, मुर्थल, सोनीपत

श्री विनोद गुप्ता
(प्रधान) सुभाष चौक मार्केट एसोसिएशन, सोनीपत

श्री सुरेन्द्र अग्रवाल
(बीमा अभिकर्ता)
जीवन बीमा निगम, सोनीपत

श्री महेश गुप्ता
निदेशक : प्रेजीडियम स्कूल ओमेक्स सिटी, सोनीपत

श्री ब्रह्म प्रकाश गोयल
(संस्थापक महासचिव)
श्री अग्रसेन सेवा मंडल, सोनीपत

श्रीमती प्रतिमा गुप्ता
(मंत्री)
हरि बोल सेवा समिति (रजि.), आगरा

श्रीमती आशा अग्रवाल
(अध्यक्ष)
देवी माधवी भक्त मण्डल, आगरा

जीवन परिचय

आचार्य विष्णु दास। मूल नाम विष्णु कुमार अग्रवाल

जन्म: जून छः उन्नीस सौ पचपन।

शिक्षा: एम०ए० (अंग्रेजी साहित्य), (हिन्दी साहित्य, बी०एड)

सम्प्रति: पूर्व अ० अध्यापक,
महाराजा अग्रसेन, इण्टर कॉलेज, आगरा।

सम्मान:

(i) अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा द्वारा सन् 2012 में सेठ द्वारिका प्रसाद राष्ट्रीय पुरस्कार एवं प्रमुख अग्रविद्वान घोषित।

(ii) मध्य प्रदेश सरकार के राज्यपाल स्व. श्री रामनरेश यादव तथा मुख्यमंत्री श्री शिवराज चौहान द्वारा रविन्द्र भवन, भोपाल में सन् 2013 में सम्मानित।

(iii) अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन एवं उत्तर प्रदेश इकाई द्वारा सन् 2014 में मिर्जापुर में विशेष सम्मान।

(iv) अग्रसेन भागवत को व्यास-पीठ से प्रारम्भ करने वाले विश्व के प्रथम अग्र भागवताचार्य तथा सप्तदिवसीय कथा के एकमात्र प्रवक्ता।

(v) गीता, भागवत, रामकथा, खाटू श्याम भागवत, अग्रमाधवी ज्ञान यज्ञ सप्ताह आदि कथाओं के संगीतमय वाचक।

रचनायें : श्रीमद्भगवत्गीता का मानस शैली में अनुवाद, दुर्गा सप्तशती का अनुवाद, खाटू श्याम भागवत, सांई भागवत, जैन रामायण, श्री अग्रसेन भागवत्, देवी माधवी महिमा, प्रथम लोकतांत्रिक भू-पति महाराज विभु, नारी की महिमा, सुन्दर काण्ड एवं हनुमान चालीसा का अंग्रेजी पद्यानुवाद, मोदी चालीसा एवं आरती, तीस से अधिक चालीसा एवं आरती, गुरु नानक चालीसा एवं आरती, एकता चालीसा एवं आरती, कुल 75 से अधिक रचनायें, जैन रामायण एवं यमुना आरती।

विशेष उपलब्धि- 2008 से अब तक 89 अग्रसेन भागवत् कथा का व्यासपीठ से वाचन जिसमें सप्तदिवसीय 15, चतुर्त्रिदिवसीय 40, द्वि-एकदिवसीय-लगभग 34

संस्थाः अग्रसेन माधवी फाउण्डेशन (अध्यक्ष), अखिल भारतीय महारानी माधवी पुरस्कार समिति (राष्ट्रीय अध्यक्ष), महाराजा अग्रसेन ज्ञान पुरस्कार समिति (अध्यक्ष) (अग्रभागवत कथाचार्यों को प्रशिक्षण)

सम्पर्कः संस्थापक-अध्यक्ष : श्री अग्र महालक्ष्मी मंदिर, बड़ा पार्क, बल्केश्वर (आगरा- 282005 (उ०प्र०)
मोबाइलः 8279466054, 9410668734
Email: Vishnud093@gmail.com